भारत का स्वतंत्रता संग्राम : एक लंबा और कठिन संघर्ष

भारत ने एक लंबे संघर्ष और बहुत बड़े बलिदान के पश्चात् स्वतंत्रता पाई थी। हमारी नई पीढ़ी को इस संघर्षपूर्ण आंदोलन से परिचित होना ज़रूरी है। तभी वे इस स्वतंत्रता का मूल्य पहचान सकेंगे। इससे उनमें देश-रक्षा की भावना जाग्रत होगी। हमें अपने बलिदानियों की कुर्बानी को स्मरण रखना होगा। इस लेख में उसी संघर्ष की एक संक्षिप्त किंतु सारगर्भित झाँकी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसे 'गागर में सागर' का प्रयास समझा जाना चाहिए।

15 अगस्त, 1947 को हमारा देश अँग्रेज़ी शासन की लंबी दासता से मुक्त हुआ और हम स्वतंत्रता के वातावरण में साँस ले सके। इस स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए भारतीयों ने एक लंबा संघर्ष किया, अनेक अत्याचार सहे, जेल की यातनाएँ सहीं तथा अपने प्राणों का बलिदान दिया। सत्रहवीं शताब्दी में अँग्रेज़ 'ईस्ट इंडिया कंपनी' बनाकर भारत में व्यापार करने आए और उन्होंने व्यापार करते-करते भारत पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया। 1757 में बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला था। अँग्रेज़ों के साथ उसका प्लासी का युद्ध हुआ। इसमें सिराजुद्दौला हार गया। इसके पश्चात् अँग्रेज़ अपनी सत्ता का विस्तार करते रहे। मैसूर के टीपू सुल्तान, कित्तूर की रानी चेनम्मा आदि शासकों ने अँग्रेज़ों का विरोध किया, पर उनकी कुछ न चली और उनके हृदयों में विद्रोह की ज्वाला सुलगती रही।

पहला स्वतंत्रता संग्राम

1857 में स्वतंत्रता की पहली विद्रोह की आग भड़की, जिसे ब्रिटिश सरकार ने 'गदर' बताया। बंगाल की बैरकपुर छावनी में भारतीय सिपाही मंगल पांडे ने चर्बी लगे कारतूस चलाने से मना करके विद्रोह कर दिया। जब यह समाचार मेरठ छावनी में पहुँचा तो वहाँ भी सैनिकों ने विद्रोह का झंडा बुलंद कर दिया। 1857 की क्रांति के प्रमुख सूत्रधार थे—राव तुलाराम, तात्या टोपे, नाना साहब पेशवा, कुँअर सिंह, मौलवी अहमदशाह, बेगम हजरत महल और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई। इस विद्रोह को अँग्रेज़ी शासन ने निर्दयतापूर्वक कुचल दिया। रानी लक्ष्मीबाई अँग्रेज़ों से लड़ते-लड़ते शहीद हो गईं। भले ही यह आंदोलन असफल हो गया था, पर इसने कंपनी-शासन की जड़ें हिला दी थीं। इसके साथ ही भारत से कंपनी-शासन समाप्त हो गया और यहाँ की सत्ता सीधे ब्रिटिश सरकार के हाथों में आ गई। अब इंग्लैंड के राजा या रानी द्वारा नियुक्त वायसराय भारत का शासन चलाने लगे।

अँग्रेज़ भारतीयों को दबाने का जितना प्रयत्न करते, उतना ही भारतीयों के मन में स्वतंत्र होने की इच्छा प्रबल होती चली गई। अनेक महापुरुषों ने भी अँग्रेज़ों के अत्याचारों का विरोध किया। कवियों ने भी अपनी कविताओं से स्वतंत्रता की ज्योति जगाई।

कांग्रेस का उदय

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना मुंबई में हुई। इसमें तैयब जी, दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेंद्रनाथ बनर्जी आदि नेता सम्मिलित हुए। 1906 में दादाभाई नौरोजी ने 'स्वदेशी' और 'स्वराज्य' का नया मंत्र दिया। बंगाल-विभाजन से लोगों में अँग्रेज़ी शासन के विरुद्ध असंतोष पैदा हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन में दो धाराएँ उभरीं—गरम दल और नरम दल। लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, विपिनचंद्र पाल, रास बिहारी बोस जैसे नेता गरम दल के थे। ये अँग्रेज़ों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही के पक्ष में थे। बाल गंगाधर तिलक ने घोषणा की थी—''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।'' नरम दल वाले नेता केवल अपना हक माँगने के पक्ष में थे।

जलियाँवाला बाग कांड

1914 में प्रथम विश्वयुद्ध में अँग्रेज़ों ने भारतीयों का सहयोग लिया। इसकी समाप्ति पर अँग्रेज़ों ने रौलट एक्ट पास करके भारतीयों को दबाना चाहा। इसका जगह-जगह विरोध हुआ। 1915 में महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट आए थे। उन्होंने अँग्रेज़ों के विरुद्ध अहिंसात्मक आंदोलन चलाया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद, मौलाना आजाद, वल्लभभाई पटेल, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू आदि नेता उनके अनुयायी बन गए।

13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक सभा हुई। इसमें लगभग 20 हज़ार स्त्री-पुरुष और बच्चे-बूढ़े एकत्रित थे। अँग्रेज़ जनरल डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलवा दीं। सैकड़ों लोग मारे गए। इस हत्याकांड से सारा देश सन्न रह गया। विदेशों में रहने वाले भारतीयों ने भी भारत को स्वतंत्र कराने के लिए अनेक क्रांतिकारी योजनाएँ बनाईं। इनमें मैडम भीखाई जी कामा का नाम उल्लेखनीय है।

असहयोग आंदोलन

1921 में महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन की घोषणा की। इसका पूरे देश में व्यापक प्रभाव हुआ। विद्यार्थियों ने स्कूल और कॉलेज छोड़ दिए और लोगों ने सरकारी नौकरियाँ छोड दीं, विदेशी वस्त्रों की होली जलने लगी, स्वदेशी माल का प्रचार हुआ और खादी का प्रचार-प्रसार हुआ। अँग्रेज़ी सरकार ने सत्याग्रहियों पर कोड़े बरसाए तथा हज़ारों लोगों को जेल में बंद कर दिया। क्रांति के इतिहास में 'काकोरी कांड' बहुत चर्चित हुआ। 19 अगस्त, 1925 को काकोरी के पास रेलगाड़ी को रोककर क्रांतिकारियों ने सरकारी खजाना लूट लिया। इस केस में 40 लोगों को गिरफ्तार किया गया। इनमें रामप्रसाद बिस्मिल, राजेंद्र लाहिड़ी, रोशन सिंह और अशफाक उल्लाह खाँ को फाँसी की सजा दी गई।

अँग्रेज़ी सरकार ने यह तय करने के लिए कि अभी भारतीय अपना शासन करने के योग्य हैं अथवा नहीं, 'साइमन कमीशन' बनाया। 1928 में जब यह कमीशन भारत आया तो सारे देश में इसका विरोध

किया गया। इसी विरोध में लाला लाजपतराय पुलिस की लाठी से घायल हुए और उनकी मृत्यु हो गई। इससे भारतीयों के मन में विरोध की ज्वाला भड़क उठी।

नमक कानून और डांडी यात्रा

31 दिसंबर, 1929 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव पास हुआ। अँग्रेज़ी सरकार ने अपने लाभ के लिए नमक बनाने पर प्रतिबंध लगा रखा था। गाँधीजी ने इस नमक कानून को तोड़ने का निश्चय किया। उन्होंने 12 मार्च, 1930 को डांडी यात्रा शुरू की और अपने सहयोगियों के साथ नमक बनाकर 'नमक कानून' भंग किया। 5 मई, 1930 को गाँधीजी सहित सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। चंद्रशेखर आजाद को 7 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में घेर लिया गया। भागने में असमर्थ चंद्रशेखर आजाद ने खुद को गोली मार ली। सरदार भगतसिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1931 को फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया। इन्होंने सांडर्स को गोली मारी थी तथा केंद्रीय असेंबली में बम फेंका था।

भारत छोड़ो आंदोलन

8 अगस्त, 1942 को गाँधीजी ने 'अँग्रेज़ो भारत छोड़ो' आंदोलन की घोषणा की। अगले दिन 9 अगस्त, 1942 को सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। सबके सामने एक ही नारा था–'करो या मरो'। जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, श्रीमती अरुणा आसफ अली जैसे अनेक समाजवादी नेताओं ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया।

सुभाषचंद्र बोस सशक्त क्रांति के समर्थक थे। वे अँग्रेज़ी सरकार को चकमा देकर 1941 में पहले अफगानिस्तान, फिर रूस होते हुए जर्मनी पहुँचे और वहाँ हिटलर से मिले। जर्मनी से सिंगापुर पहुँचे और वहाँ 21 अक्तूबर, 1943 को 'आजाद हिंद सरकार' और 'आजाद हिंद फौज़' का गठन किया। उन्होंने तीन नारे दिए–'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा', 'दिल्ली चलो' और 'जय हिंद'।

क्रांतिकारियों का योगदान

स्वतंत्रता संग्राम में अनेक क्रांतिकारियों की प्रमुख भूमिका रही। क्रांतिकारियों का मुख्य केंद्र था–बंगाल। महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन के प्रमुख नेता थे–श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर आदि। पंजाब में भाई परमानंद, लाला हरदयाल, अजीत सिंह। आंध्रप्रदेश में अल्लूरि सीतारामराजु आदि।

अब तक अँग्रेज़ी सरकार के हाथ-पाँव फूल चुके थे। लार्ड माउंट बेटेन नए वायसराय बनकर भारत आए। मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्ना मुसलमानों के लिए अलग देश लेने पर अड़ गए। अंततः माउंट बेटेन की योजना के अनुसार देश के दो टुकड़े हो गए–भारत और पाकिस्तान।

15 अगस्त, 1947 का दिन आया। हमारा देश स्वतंत्र हुआ। हमें यह स्वतंत्रता हज़ारों देशभक्तों के संघर्ष और बलिदान के फलस्वरूप प्राप्त हुई। हमें उनके बलिदान को सदैव स्मरण रखना होगा ताकि इस देश की स्वतंत्रता की रक्षा कर सकें।